HHR17-3-2 -HI

श्रृंखला ३: अरमगेदोन, दूसरा आगमन और अनंत भविष्य - कार्यक्रम २

उद्घोषक : आज लगभग आधा मसीही समाज यह विश्वास करता है कि उन के जीवन काल में ही मसीह का दोबारा आगमन हो जाएगा । प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कलीसिया के लिए मसीह यीशु के अंतिम वचनों को समाविष्ट करती है । वह भयानक घटनाओं की चेतावनी देते हैं जो विपत्ति के दौरान पृथ्वी पर आएंगे, शैतान का क्या होगा, मसीही विरोधी का क्या होगा, और सभी जो झूठे धर्म का पालन करते हैं । वे बताते हैं कि अर्मगेदोन कि लड़ाई के दौरान क्या होगा, पृथ्वी पर दोबारा आगमन के दौरान, हजार वर्ष के राज्य, अंतिम न्याय, साथ ही वर्णित करते हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों के निमित अनंत काल के लिए क्या योजना बनाई है। इस श्रंखला में हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के हर एक अध्याय का गहन अध्ययन करेंगे और इसमे के संदेश और परमेश्वर के इशारों को बेहतर समझने का प्रयास करेंगे।

आज, हम तीसरे भाग की शुरुआत करेंगे जिसे हमने शीर्षक दिया है “अरमगेदोन, दूसरा आगमन और अनंत भविष्य, प्रकाशितवाक्य १४-२२”। मेरे मेहमान हैं: डॉ एड हिंड्सन, लिबर्टी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ़ रिलीजन के डीन और धर्म के प्रतिष्ठित प्रोफेसर, और ४० से अधिक पुस्तकों के लेखक। डॉं मार्क हिचकॉक बाइबल प्रतिपादन के सहयोगी प्रोफेसर हैं डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी मे। वे बाइबिल की भविष्यवाणी पर ३० पुस्तकों के लेखक हैं, और फेत बाइबल चर्च के वरिष्ठ पाज़बान हैं। डॉ रॉन रोड्स भि डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी में पढाते हैं, और रीज़निंग फॉर द स्क्रिप्चर्स मिनिस्ट्रीज़ के अध्यक्ष हैं। इन्होंने भविष्यवाणी पर लगभग ७० पुस्तकें लिखी है। आइए जुड़िए हमारे साथ जॉन एकरबर्ग शो के इस विशेष संस्करण में।

*****

एंकरबर्ग: हमारे कार्यक्रम में आपका स्वागत है। मैं हूं जॉन एंकरबर्ग, मेरे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद। हम चर्चा कर रहे हैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर, अरमगेदोन का युद्ध पीछे छूट चुका है और अब यीशु स्वर्ग से वापस आए हैं उनका दूसरा आगमन हो चुका है। आगे हम बात करने जा रहे हैं : अब वे क्या करेंगे ? अब आगे क्या होगा ? स्वर्ग में क्या हो रहा है ? यह बेहद रोचक विषय है, बहुत अत्यधिक, रोचक और विशेषकर मसीहियों के लिए काफी उत्साहजनक। तो, एड, आप आरंभ करें। सारांशित कर बताएं कि अब तक हमने जो चर्चा कि, पिछले हफ्ते हम कहां रुके थे, और इस हफ्ते हम क्या चर्चा करने वाले हैं।

हिंड्सन : ठीक है, जॉन, हमने अब तक तीन न्यायों की श्रंखला को पार कर लिया है, मुहर ,तुरही और कटोरे का न्याय। फिर आप इस पुस्तक के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं प्रकाशितवाक्य के १९वें अध्याय में। यह विश्वासियों के लिए खुशखबरी है। वे ऊपर स्वर्ग में है। तो १९वें अध्याय की शुरुआत होती है चार हालेलुयाह के उद्घोष के साथ मेम्ने के विवाह की प्रत्याशा मे। (प्रकाशितवाक्य) १९:७, "आओ, हम आनंदित और मगन हो, और उनकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है, और उनकी दुल्हन ने अपने आपको तैयार कर लिया है।" देखिए, पूरे नए नियम में दुल्हन, मसीह की दुल्हन, नए नियम की कलीसिया है, नया जन्म पाए वास्तविक विश्वासियों का ***शरीर / समूह***। "उस को शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि वह महीना मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं," प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उद्धार का चिन्ह, सफेद मलमल का वस्त्र। "तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, 'यह लिख : "की धन्य वह हैं जो मैंने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं ! """

तो अब कलीसिया, मसीह की दुल्हन, स्वर्ग में है १९वें अध्याय के अनुसार**,** पूर्वानुमानित है कि कलीसिया पहले ही उठाई जा चुकी है। जब ये पीड़ा काल के न्याय नीचे यहां पृथ्वी पर हो रहे थे, तब दुल्हन वहां ऊपर प्रभु के

साथ है, संभवतः मसीह के न्याय सिहासन के सामने, जहां मसीह अपने न्याय सिंहासन पर हैं, और उसे सफेद ***(मलमल के)*** ***वस्त्र / चौगे*** के साथ अपना प्रतिफल भी मिलता है। और वह सफेद चौगा उसे उसके विवाह के लिए तैयार करता है। विवाह स्पष्टतः स्वर्ग में है।

आवश्यक है कि उस समय कलीसिया स्वर्ग में हो उठाए जाने के समय, तभी दोबारा आगमन से पहले उसका विवाह हो सके क्योंकि ११वीं आयत में यू लिखा है," मैंने स्वर्ग को खुलते देखा, और..., एक सफेद घोड़ा (इस बार)। और उस पर एक सवार हैं जो विश्वास योग्य और सत्य कहलाते हैं।" यह कोई प्रतीक नहीं है, पर स्वयं प्रभु यीशु हैं। और वह वापस आते हैं आंखों में अग्नि की ज्वाला के साथ, जैसे हमने पहले अध्याय में देखा। उनके पास एक गुप्त नाम लिखा हुआ है जो उनके सिवाय और कोई नहीं जानता। "स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़े पर," १४वीं आयत, "सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहने हुए उनके पीछे पीछे है।" यकीनन, यह उन्हें विवाह के समय मिला, ८वीं आयत में।

तो यह अवश्य ही कलीसिया है, स्वर्ग पर उठाई गई, न्याय सिंहासन के सामने, विवाह में, और अब दोबारा विजई होकर वापस आ रही है जब वे अपने मुंह के तलवार से बात करें,गे मसीह विरोधी की सेना को का नाश करेंगे, और उनके पास एक नाम लिखा है, "राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु।" यह इस पुस्तक का चरमोत्कर्ष है। यही वह महान आशा का संदेश है जिसकी हम अपेक्षा में हैं। स्वर्ग खुलेगा यीशु आएंगे, और हम उनके साथ आएंगे।

एंकरबर्ग : ठीक है, रोन, मुद्दा यह है जैसे हमने पिछली श्रंखलाओं में चर्चा की थी, बाइबिल हमें बताती है कि यह निकटस्थ घटना है; यह कभी भी हो सकती है। ओके, तो अगर हम मान लें कि यह अगले १० मिनट में होती है, ठीक है, और हम यहां से सेकेंडों में चले जाएंगे ,पलक झपकते ही, हम अपने आप को स्वर्ग में पाएंगे, ठीक है? और ऐड ने कहा की यहाँ कुछ घटनाओं का घटित होना है और यह हम जानते हैं, सर्वप्रथम, पीड़ा का काल जो

कि ७ वर्ष है, ओके? तो यह ७ वर्ष तक चलेगा। पर सिंहासन, मसीह का न्याय सिंहासन है। यह अविश्वासियों के लिए नहीं, केवल विश्वासियों के लिए है। और जो विश्वासी अभी हमें सुन रहे हैं, जानना चाहेंगे, यीशु किस बात कि छानबीन करेंगे ? दंड / जुर्माना क्या होंगे ? उसके प्रतिफल क्या होंगे ? तब क्या होगा? हमें बताएं कि मसीह के न्याय का सिंहासन क्या है ?

रोड्स : अच्छा प्रश्न, क्योंकि ऐसे कई लोग हैं जो अलग-अलग न्याय प्रक्रिया को एक ही न्याय समझ बैठते हैं। कई अलग न्याय हैं जैसे मरे हुए अविश्वासियों का श्वेत सिंहासन पर ; इसराइल का न्याय, यहेजकेल २०; जातियों का न्याय मत्ती २५: ३१-४६; शैतान के विरुद्ध भी ६-७ न्याय होने हैं। कहने का मतलब कई सारे न्याय हैं। तो मसीहियों को किस तरह के न्याय का सामना करना होगा ?

इस प्रश्न की थोड़ी भूमिका में आपको जल्दी से देना चाहूंगा। हमने पहले बात की थी कि कैसे दुष्टों और अविश्वासियों के विरुद्ध दंड के अलग-अलग दर्जे होंगे, क्योंकि प्रभु इस बात को मानते हैं कि अविश्वासियों के बीच दुष्टता के अलग-अलग स्तर होंगे। वैसे ही मसीहियों में भी यीशु के प्रति समर्पण के अलग-अलग स्तर हैं। कुछ मसीही शारीरिक हैं, वही कुछ एक का समर्पण बेहद उत्तम है। यीशु सिद्ध न्यायि है। और क्योंकि वे सिद्ध न्यायी हैं वे उन्हें प्रतिफल देंगे जिन्होंने विश्वासयोग्यता के साथ जीवन बिताया है।

और वचन इन पुरस्कारों को मुकुट के तौर पर हमें दर्शाता है। जैसे कि उद्धार का मुकुट, महिमा का मुकुट, जीवन का मुकुट। यह उन पुरस्कारों के प्रतीक हैं जो मसीह हमें देंगे। ऐसा नहीं है कि हमारी स्वयं की कोई महिमा होगी। क्योंकि प्रकाशितवाक्य 4 में हम देख सकते हैं कि कैसे हम अपने मुकुटों को लेते हैं और उन्हें मसीह के सिंहासन के सामने फिर से रख देते हैं। तो अंततः जो मुकुट या पुरुस्कार हम पाएंगे वह अपने सृष्टिकर्ता को अधिक महीमित करने में हमारा सहयोग करेंगे, हमारी मृत्यु के पश्चात, जो मुझे लगता है इसे देखने का सही दृष्टिकोण है।

अब जॉन, मैं एक बात साफ कर दूं, आप उद्धार में बने रहते हैं या नहीं, इन न्यायों का इस से कोई सरोकार नहीं है। वह प्रश्न ही यहां नहीं उठता। बल्कि, आप मसीह के सामने खड़े होंगे और मसीह आपका मूल्यांकन करेंगे ना केवल आपके जीवन का पर आपकी धारणाओं का भी। आपके दिमाग में उठे सोच का, और अपनी दृष्टि से वह सब कुछ देख पाएंगे।

एंकरबर्ग : हां। और मार्क, परमेश्वर भले हैं। और सभी कुछ ना कुछ पाने वाले हैं।

हिचकॉक : बिल्कुल सही। १ कुरिन्थियों ४ में बाइबिल हमें बताती है कि मनुष्य के हृदय के उद्देश्य उस दिन उजागर किए जाएंगे। और हमारे लिए इस सोच की शक्ति को समझना आवश्यक है। यहां "क्या" किया गया पर नहीं पर "क्यों" किया गया पर जोर है। पर इसके बाद, भले ही, वे कहते हैं, हर मनुष्य ***की महिमा / का प्रतिफल*** परमेश्वर से उसे मिलेगा। वहां यह एकवचन है। तो मुझे लगता है परमेश्वर हर विश्वासी के जीवन में कुछ तो पाएंगे कि उन्हे प्रतिफल दें। पहले मैं सोचता था कि कुछ तो ऐसे भी लोग होंगे जो न्याय सिहासन से खाली हाथ चले जाएंगे। और इस विषय में कई कविताएं भी है। पर एक बार मैंने एक पाज़बान को कहते सुना, कि हर मनुष्य का प्रतिफल उसे परमेश्वर से मिलेगा। और जरा सोच कर देखिए : कि हम प्रभु के सामने खड़े हैं। और देखिए, इस ब्रम्हांड के सृष्टिकर्ता, तारों के चरवाहे, वे मेरे जीवन में ऐसा कुछ पाएंगे, कि उस समय वह मुझे प्रतिफल देंगे। और अगर यह बाइबिल में नहीं होता, तो शायद मैं विश्वास न करता। पर वे हर विश्वासी के जीवन में कुछ ऐसा पाएंगे जिसके लिए उन्हें शाबाशी दें और प्रतिफल दें। और यह बड़े प्रोत्साहन की बात है, कि हमें उनके लिए जीवन बिताने की प्रेरणा मिले।

एंकरबर्ग : हां। और यह भी होगा, उस न्याय के फल स्वरुप आपको एक खास वस्त्र मिलेगा। दूसरे शब्दों में, न्याय के बाद यहीं से आपको आप के वस्त्र दिए जाएंगे आपके कार्यों के अनुसार। तो कुछ लोग जो मेम्ने के विवाह के भोज में आएंगे, वे तमाम लोग एक समान नहीं होंगे मित्रों। कुछ लोगों के वस्त्र वहां मौजूद दूसरे लोगों से हो

सकता है बिल्कुल भिन्न हो। वह एक समान नहीं होंगे। ठीक है? पर सभी के पास कुछ ना कुछ तो होगा की वह मेमने के विवाह भोज में भाग ले सकें ।

हिचकॉक : दरअसल, आपने सही कहा। और, वास्तव में, जरा सोचिए, जब एक जवान स्त्री का विवाह हो रहा हो, उसकी पूरी सोच केवल यही होती है : तमाम योजनाएं, केक, वह कहां से आने वाले हैं, कहां से खरीदारी होगी, उनके वस्त्र, आभूषण, यह सारी तमाम बातें। और यह रोचक है, आज अधिकतर विश्वासी मेमने के विवाह के विषय लगभग सोचते ही नही, जब उनका विवाह प्रभु यीशु से होने पर होगा।

प्रेरित पौलुस 2 कुरिन्थियों मे कहते हैं कि हम मसीह की "मंगेतर" है। तो हम कह सकते हें कि अभी मंगनी के बाद के समय में हैं। और, यकीनन, जब आप की मंगनी किसी से हो चुकी है तो सबसे महत्वपूर्ण है कि उस व्यक्ति के प्रति आपका प्रेम निरंतर बढ़ता जाए। आप उनकी अधिक समझ प्राप्त करने की कोशिश करेंगे, उनकी अधिक नजदीकी में जाने की कोशिश करेंगे। विश्वासयोग्य रहेंगे।

ऐसे हम भी अभी मंगनी के बाद के काल में हैं। पर एक दिन जब हम स्वर्ग में उठा लिए जाएंगे, और प्रतिफल पाने के बाद, हमारा विवाह यीशु मसीह के साथ होगा। हमें उनके पास ले जाया जाएगा और उनके साथ विवाह के बाद हम निरंतरता के लिए उन से जुड़ जायेंगे। और उस दिन जो वस्त्र हम पहनेंगे वह हमने खुद ने बनाया हुआ वस्त्र होगा। तो मुझे लगता है हम सबों के लिए यह आवश्यक है कि अपने आप से पूछें, "मैं कहां होऊंगा ? मैं क्या कर रहा होऊंगा ? कैसा समय होगा वह समय जब मैं प्रभु के सामने खड़ा होऊंगा ?"

एंकरबर्ग : हां, इसे कुछ ऐसा समझिए, मानो यीशु यहां सात कलीसिया के बीच खड़े हैं और वह एक-एक को देख रहे हैं वे उनके हृदयों को जानते हैं उनके कार्यों को पहचानते हैं, सब कुछ उनके सामने प्रत्यक्ष है, ओके? अगर वह हमें चर्च जाते देख रहे हैं, उनका देखना / ***पूछना*** होगा, हम कैसे आराधना करते हैं ? क्या वास्तव में प्रभु की आराधना करते हैं, या फिर केवल नाम मात्र के लिए दिखावे के लिए रविवार की सुबह हम वहां

उपस्थित हैं? क्या हम वाकई में प्रभु को प्रसन्न करने के लिए वहां हैं ? क्या हम वाकई में बाइबल से परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए वहां है कि हम उसे अपने जीवन में लागू कर सकें ? इसी प्रकार की चीजों की अभी हम यहां बात कर रहे हैं। प्रभु की सेवा हम कैसे करें ? वह हमारे हृदय को जानते हैं ; हम उनके विषय क्या सोचते हैं वह जानते हैं। और आप क्या कहेंगे, रॉन।

रोड्स : मैं सिर्फ इतना कहूँगा कि मुझे नहीं लगता कि यह उन सिद्धांतों में से एक होना चाहिए जो बहुत डर पैदा करते हैं; बल्कि प्रभु के प्रति हमारे आदर को बढ़ाने वाला हो, कि हम उन्हें और अधिक प्रसन्न करना चाहे, ना केवल इसलिए कि उन्होंने हमें उद्धार दिया बल्कि भविष्य के उन पुरस्कारों को भी ध्यान में रखते हुए।

एंकरबर्ग : हां। मैं हमेशा यह सोचता हूं जब वचन कहता है, खासकर पौलुस, कि तुम्हारा न्याय तुम्हारे अच्छे और बुरे दोनों कार्यों के लिए होगा। मैं हमेशा इसे ऐसे समझता हूं, जब आप उद्धार पाते हैं प्रभू नीचे देखते हैं और कहते हैं उन्होंने आपके पूरे जीवन के लिए एक योजना तैयार कर ली है। और अगर हर चीज में आप उनका अनुकरण करते हैं उनकी मानते हैं तो आपके लिए प्रतिफलों की एक पूरी ताक़ तैयार है। पर यदि कुछ बिंदुओं पर आप उनके साथ नहीं चलते, तो आप यह खो देते हैं, आप इसे भी खो देते हैं, आप उसे भी खो देते हैं, और आप वह भी खो देते हैं। और मुझे लगता है जब हम न्याय सिहासन के सामने पहुंचेंगे, मार्क, सच्चाई यह है, हमने कई सारे प्रतिफल खो दिए होंगे जो शायद हमें मिल सकते थे अगर हम उनका पीछा भली-भांति करते।

हिचकॉक : आपने बिल्कुल सही कहा। जी हां, परमेश्वर सभी को अलग-अलग प्रकार का प्रतिफल देंगे। मैंने पहले भी कहा था, हर व्यक्ति अपना प्रतिफल परमेश्वर से पाएगा। तो एक चीज जो हम परमेश्वर से पाएंगे वह है उनकी शाबाशी। साथ ही साथ हमें वहां मुकुट से भी नवाजा जाएगा, एक तरह का सम्मान, ऐसा कह सकते हैं, जो हमें दिया जाएगा जिसे हम उनके चरणों में समर्पित करेंगे। और वहां ***पदवी / अधिष्ठान*** भी है। आने वाले मिलेनियल राज्य में, जानते हैं, कोई पाँच शहरों पर राज्य करेगा, कोई दस शहरों पर राज करेगा। तो हमें एक

प्रकार के अधिकार का ओहदा दिया जाएगा हमारे इस जिंदगी की विश्वासयोग्यता के आधार पर। तो आज जिस प्रकार के इंसान हम यहां हैं वही निर्धारित करेगा हमारे स्वर्ग में अनंत काल के स्थान व ओहदे को। तो यह हमारे इस जीवन को अहमियत देता है, गंभीरता देता है, कि आनंद और विश्वासयोग्यता से हम प्रभु की सेवा कर पाए, ताकि हम अनंत काल तक उनकी सेवा टहल कर सकें।

एंकरबर्ग : हां। और केवल यह सोच कि हमें उनसे प्रतिफल मिलेगा, काफी अद्भुत है।

हिचकॉक : यह केवल अनुग्रह है।

एंकरबर्ग : तो मित्रों, हम इस बिंदु पर पहुंच चुके हैं जहां यीशु ने फतह कर लिया है, और संसार अब उनका है। मुझे बताएं वह आगे क्या करते हैं।

हिंड्सन : देखिए, जैसे यहां इस अध्याय की शुरुआत होती ,है अध्याय २०, यहाँ लिखा है, "उन्होंने उस अजगर को, पुराने सांप को,... इब्लीस और शैतान है, १००० वर्ष के लिए बांध दिया।" तो मसीह के दोबारा आगमन पर, पिछली बार हमने देखा जब मसीह आए, उन्होंने अरमगेदोन की लड़ाई को जीता। पशु और झूठे भविष्यवक्ता को जिंदा आग के कुंड में फेंका गया। ये हजार साल तक वहीं पर बंदि रहेंगे। उसी दरमियान, शैतान भी हजार साल के लिए बांधा जाता है। उसे अथाह कुंड या पाताल में फेंका जाता है, और वहां मुहर लगा दी जाती है, ताकि वह दोबारा देशों को धोखा ना दे सके जब तक की हजार वर्ष पूरे नहीं हो जाते।

और फिर वहां बात हो रही है उन लोगों की जो मसीह के साथ हजार साल के लिए राज्य करेंगे। तो हमें यह मानकर चलना होगा कि मसीह के अधीन संसार को पुनर्गठित किया गया। यह एक शानदार मिलेनियल शासन है शांति और समृद्धि भरा। कोई लड़ाई झगड़ा नहीं। शैतान बाहर नहीं निकल सकता देशों को धोखा देने, और अब आपके सामने एक आदर्श मिलेनियल युग है।

पर कुछ लोगों का कहना है, “अरे, शैतान तो क्रूस की ताकत द्वारा बांधा जा चुका है। उसे बंदी बनाया जा चुका है; प्रकाशितवाक्य २० पूरा हो चुका है। यकीनन नहीं। शैतान जिंदा है और बेशक पृथ्वी पर मौजूद है। पतरस कहते हैं “वह गरजने वाले सिंह के समान, इस खोज में है कि कि से फाड खाए।” पौलुस कहते हैं “वह आकाश के

अधिकार का हाकिम है जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है।" शैतान अब तक बंदी नहीं बनाया गया है जैसा कि प्रकाशितवाक्य २० में वर्णित है ।उस समय परमेश्वर उसे बांधकर अथाह कुंड में डालेंगे कि वह बाहर ना आ सके और देशों को धोखा ना दे सके। और फिर वे संसार को एक अवसर देना चाहते हैं कि संसार को वास्तविक संभावनाओं का आभास हो सके जो उसमें हमेशा से मौजूद थी; यह खूबी जो स्वर्ग नहीं है, पर लगभग धरती पर ही स्वर्ग की तरह है।

एंकरबर्ग : इससे पहले कि हम मिलेनियम युग और वहां लोग क्या अनुभव करेंगे, इस पर बात करें, मैं इस ओर आपका ध्यान चाहूंगा, शैतान को अथाह कुंड में फेंक दिया गया है। प्रकाशितवाक्य २०:१० मे लिखा है "उनका भरमाने वाला शैतान आग और गंधक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यवक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वह रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।"

अब हम उस महान श्वेत सिंहासन के न्याय पर आते हैं। अंततः हम इस मकाम पर हैं जहां उसे उस कुंड में डाला जाएगा और वह दौबारा बाहर कभी नहीं आएगा। पर मुद्दा यह हे, इसके साथ एक और वचन भी है, “और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेमने के सामने आग और गंधक की पीड़ा में पड़ेगा। उनकी पीड़ा का

धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं, और उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा।”

अब, मार्क, जबकि शैतान और उसके दूतों को हमेशा के लिए अथाह कुंड में डाल दिया गया है जहां से धुआं उठता रहता है, और वहां अनंत काल के लिए सजा है। इसका संबंध उन लोगों से भी है जिन्होंने पशु का चिन्ह अपनाया, और उन लोगों से भी जिन्होंने मसीह का तिरस्कार किया। दरअसल, हम देख सकते हैं मसीही हलकों में दो प्रकार की विनष्ट या विलुप्ति की धारणा को ***स्वीकार / अपनाया*** जा रहा है, ओके? क्योंकि उन्हें अनंतकाल के सजा का सिद्धांत पसंद नहीं, ओके, इसलिए वे इसे बदलना चाहते हैं। और इस विलुप्ति की धारणा कि दो परिभाषाएं हैं। उन्हें हमें समझाएं।

हिचकॉक : जी हां, विलुप्ति की धारणा के दो अलग-अलग विचार हैं। एक धारणा है कि हर अविश्वासि इंसान अविनाशी है। और यदि, अविश्वासी मरते हैं, बिना यीशु में उद्धार पाए, तो वह तुरंत ही विलुप्त हो जाते हैं; उनका अस्तित्व नहीं रहता। पर हम जानते हैं कि यह सही नहीं हो सकता क्योंकि बाइबल हमें बताती है मरने के बाद कि सज़ाओं की कई अलग-अलग श्रेणियां हैं। पर विलुप्ति की श्रेणियां नहीं हो सकती: या तो आप विलुप्त होंगे या फिर नहीं होंगे।

दूसरा जो विचार है, वह है सशर्त ***अविनाशिता / अमरता***। इसमें माना जाता है कि सभी नाशवान है, पर विश्वासी मरणोपरांत, अविनाशिता हासिल कर लेते हैं। और वे अविश्वासी जिन्हें की आग की झील में झोंका गया था, कुछ ही समय वहां रहते हैं, और कुछ समय बाद वे वहां से विलुप्त हो जाते हैं, अस्तित्व में नहीं रहते। उनकि ***अविनाशिता / अमरता*** सशर्त है। पर आपकी पढ़ी हुई आयतें बताती है कि यह सदा सर्वदा के लिए हैं । वे बताती हैं कि यह हमेशा बनी रहेंगी, और उस विचार के विरोध में खड़ी नजर आती हैं कि किसी तरह इन सजाओं का अंत होगा।

यह काफी आकर्षक भी है। लिखा है यीशु के दोबारा आगमन पर वह पशु और झूठा भविष्यवक्ता, दोनों आग के कुंड में फेंके जाएं।गे फिर हजार साल के बाद जब शैतान और उसके दूत वहां झोंके जाएंगे, लिखा है कि पशु और झूठा भविष्यवक्ता वहां भी हैं। मतलब यह कि वे वहां पुरे हजार साल के लिए हैं ।वह किसी तरह विलुप्त नहीं हो गए। वह मौजूद हैं।

रोड्स : एक और बात गौर करें विलुप्ति की धारणा सजा से बचने की ओर इशारा करता है। एक अचेत सजा वास्तव में सजा कहला ही नहीं सकती। जबकि इसे अनंतकाल के दंड के रूप में दर्शाया गया है। रोचक बात यह है अनंत काल के लिए जो पद स्तेमाल हुआ है धर्मी के उद्धार और अधर्मी के दंड कि लिए, दोनों एक हैं।

एंकरबर्ग : हां, जैसे कि धर्मियों को अनंत जीवन का वरदान मिलेगा। उसी प्रकार दुष्टों के लिए भी कहा गया है, उन्हें अनंत काल तक सज़ा भुगतनी होगी।

चलिए अब हम मिलेनियम की अच्छी बातों की और चलते हैं। सर्वप्रथम, वहां पृथ्वी पर मनुष्य शरीर में लोग हैं जिन्होंने अंततः उस पीड़ा कॉल को पार किया, ठीक है ? यहूदी जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया जिन्हें उन्होंने बचाया, वह भी इसके भाग हैं। शायद संसार के दूसरे भागों से भी मसीही हो सकते हैं। तो वह इस राज्य में आते हैं, मिलेनियल राज्य। और मसीह की दुल्हन मसीह के साथ उनके पृथ्वी पर दोबारा आगमन के समय आती है। तो मसीह की दुल्हन जिसका शरीर बदल चुका है, अमर शरीर, अविनाशी शरीर, मानवीय शरीर नहीं, वह भी इस भीड़ मे हैं। अब, यह सब कुछ कैसे होगा ?

हिंड्सन : देखिए, मुझे लगता है ऐसे होगा, यूहन्ना, चौथी आयत में यूं कहते हैं, "मैंने सिंहासन देखा, उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया।" यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था, कि वे, मिलेनियम राज्य के दौरान, लोगों का न्याय करेंगे। "वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे," वगैरह। तो यहां, दो चीज़े हो रही है। यहां, वे विश्वासी जो उठाए जाने के समय स्वर्ग ले जाए गए, अब महिमित शरीर में दोबारा आते हैं मसीह के साथ राज्य करने। और वह लोग भी हैं जो पीड़ा काल के दौरान बचाए गए, सातवें अध्याय के अनुसार, जो अपने स्वाभाविक शरीर में है, और इस दौरान मसीह की सेवा करते रहे। और संभवतः ये वे लोग हैं, जिनके संतान और परिवार भि उनके साथ है, हजार साल के दौरान। क्योंकि बड़ा झटका, प्रकाशितवाक्य के पुस्तक की चौंकाने वाली बात यह है, हजार साल के बाद शैतान छोड़ा जाता है और वह दोबारा देशों को धोखा देने निकलता है; वे लोग नहीं जो उठाए, गए परंतु वह जो इस मिलेनियम राज्य के दौरान ***बचे रहें / जीवित रहे***। उनमें से कुछ लोग विद्रोह करेंगे मिलेनियम के अंत में।

एंकरबर्ग : इससे परमेश्वर का उद्देश्य क्या है?

हिंड्सन : मुझे लगता है इंसानों के हृदय को परखने के लिए, मनुष्य हृदय की ***भ्रष्टता / अनैतिकता*** का आभास कराने। यह भी दर्शाने कि परमेश्वर अनुग्रह कारी हैं, कि परमेश्वर ने वह सब कुछ किया जो वह कर सकते थे, ***कि उनके लिए / मनुष्यों के लिए***, जीने का एक आदर्श वातावरण तैयार हो सके। पर केवल वातावरण आपको नहीं बचा सकता। वह आपको नहीं बदलता। यहां तक कि परमेश्वर के चमत्कारों को देखकर भी आप अपने आप में परिवर्तन नहीं करेंगे। कई लोगों ने यीशु को चमत्कार करते देखा पर उन पर विश्वास नहीं किया। परमेश्वर की आत्मा को आप को बदलना होगा; आप को छुड़ाना होगा; आप को परिवर्तित करना होगा और उधार देना होगा। उन्हें आपके आंतरिक मनुष्यत्व को अपनी सामर्थ्य से बदलना होगा। और मुझे लगता है पूरे मिलेनियम का संदेश यही है। परमेश्वर इसराइल के प्रति अपनी वचनों को पूरा करेंगे – पृथ्वी पर एक साक्षात राज्य। पर वह साक्षात राज्य फिर भी एक इंसानी राज्य ही है। जिसका अंत भी होगा जब यीशु अंततः उस राज्य को सर्वदा के लिए पिता के हाथों में सौपेंगे और तब आप उनके ***साथ एक हो जाएंगे / मिल जाएंगे*** अनंत राज्य में जैसे की हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंतिम अध्याय में देखते हैं।

एंकरबर्ग : ऐड, कई लोगों ने इस विषय नहीं सुना होगा। ना ही यीशु को गंभीरता से लिया होगा, ओके? अगर परमेश्वर ने इस कार्यक्रम के जरिए उनसे बात की है : अवश्य वे सर्वदा के लिए नरक में नहीं होना चाहेंगे, वे मिलेनियम राज्य में होना चाहेंगे, वे अनंत काल के राज्य में, नए स्वर्ग, नए पृथ्वी में जाना चाहेंगे – जिसके विषय हम अगले हफ्ते बात करेंगे। कैसे वे यीशु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध में आ सकते ,हैं अगर उन्होंने अब तक यह नहीं किया है और ना हि वे नहीं जानते ? ***उनके लिए आपकी सलाह क्या होगी / उन्हें बताएं कि वह क्या और कैसे करें?***

हिंड्सन : राजा को स्वीकारने द्वारा। ऐसे ही आपको करना होगा। आपको किसी खास चर्च या समूह में शामिल होना या कुछ देना या कुछ भी और नहीं करना है। आप विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह का उत्तर देते हैं।

यह कहकर, "मैं विश्वास करता हूं यीशु पर कि वे वही हैं जिसका उन्होंने दावा किया; वे वह सब कुछ कर सकते हैं जो उन्होंने कहा। कि वे मेरे पापों के खातिर मेरी जगह मारे गए। कि वे मेरे खातिर मुर्दों मे से जी उठे, और मुझे अनंत जीवन का वरदान देने को तत्पर हैं। और मैं उसे विश्वास से ***लेता हूँ / हासिल करता हूं***। मैं सर्वदा के लिए अपना हृदय अपना जीवन अपनी आत्मा उन्हें समर्पित करता हूं। और मैं उन पर विश्वास करता हूं और यकीन करता हूं कि जो उन्होंने क्रूस पर किया वह काफी है; कि जब यीशु ने क्रूस पर से कहा, '"यह पूरा हुआ,' पूरा दाम चुकाया, उन्होंने मेरे खातिर पूरा दाम चुका दिया। मैं इस पर यकीन के द्वारा इस विश्वास को व्यक्तिगत बनाता हूं, उन पर विश्वास करते हुए, और अनंत जीवन के वरदान को कबूलते हुए।"

एंकरबर्ग : ठीक है, मित्रों, यीशु ने वह सब कुछ किया जो आवश्यक था जब वह क्रूस पर थे कि आपको पिता के सामने शुद्ध और पवित्र प्रस्तुत कर सकें। उन्होंने आपके पापों के दाम को पूरा चुकाया। और वे आपको यह एक उपहार की तरह देते हैं। परमेश्वर का उपहार अनंत जीवन है जो हमें प्रभू यीशु मसीह के द्वारा मिलता है। और अगर आप उनके पास आएंगे, वे तमाम आशीषें, जिनकी चर्चा हम बाइबिल में देखते हैं, वह आपके हो जाते हैं, परमेश्वर उन्हें आपको देते हैं। वे कभी नहीं बदलते, और आप इसका अनुभव अपने जीवन काल में कर पाएंगे।

अगले हफ्ते, हम बात करेंगे मिलेनियल राज्य के बाद क्या होगा। आप में से कईयों ने इस विषय नहीं सुना होगा। अनंत भविष्य में क्या होगा ? यह नया यरूशलेम क्या है ? पृथ्वी का पुनर्गठन, नई पृथ्वी, नया स्वर्ग, यह सब कुछ क्या है ? इसका मतलब क्या है ? यह बेहद रोचक बातें हैं, मैं आशा करता हूं अगले हफ्ते आप हम से जुड़ेंगे

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यदृ ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2016 ऋच्ड्ढक्ष्